कक्षा-11 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

એકમ/પ્રકરણ	અધ્યયન નિષ્પત્તિ	પાઠ્યપુસ્તકના સ્વાધ્યાયમાં ઉમેરવાની બાબતો
गद्य-खंड 1. नमक का दारोगा	H1104, H1106	विविध साहित्यिक विद्याओं का संक्षिप्त परिचय दिया जाय ।
2. मियाँ नसीरूद्दीन	H1105, H1109	
3. अपू के साथ ढाई साल	H1105, H1108, H1113	
4. विदाई-संभाषण	H1102	
5. गलता लोहा	H1106, H1108	
6. स्पीति में बारिश	H1103, H1105	
7. रजनी	H1101, H1107, H1110	कार्यालयी-पत्र संबंधी जानकारी शामिल करें ।
8. जामुन का पेड़	H1107, H1109	
9. भारत माता	H1101, H1110	
10. आत्मा का ताप	H1113	
पद्य-खंड 1. (i) हम तो एक-एक करि जांना	H1106	
(ii) संतों देखत जग बौराना	H1112	
2. (i) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई	H1109	
(ii) पग घुंघरू बांधि मीरा नाची	H1109	
3. पथिक	H1103	
4. वे आँखें	H1103, H1111	

એકમ/પ્રકરણ	અધ્યયન નિષ્પત્તિ	પાઠ્યપુસ્તકના સ્વાધ્યાયમાં ઉમેરવાની બાબતો
5. घर की याद	H1106	
6. चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती	H1103, H1106, H1109	
7. गज़ल	H1105	
8. (i) भूख ! मत मचल (ii) हे मेरे जूही के फूल ईश्वर	H1110, H1112 H1110	
9. सबसे खतरनाक	H1112	
10. आओ, मिलकर बचाएँ	H1103	

कक्षा-12 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

એકમ/પ્રકરણ	અધ્યયન નિષ્પત્તિ	પાઠ્યપુસ્તકના સ્વાધ્યાયમાં ઉમેરવાની બાબતો
1. (i) आत्मपरिचयं (ii) एक गीत	H1209 H1210	
2. (i) पतंग	H1209, H1211	
3. (i) कविता के बहाने (ii) बात सीधी थी पर	H1201 H1201	
4. (i) कैमरे में बंद अपाहिज	H1209, H1210	
5. (i) सहर्ष स्वीकार है	H1205	
6. (i) ऊषा	H1209	
7. (i) बादल राग	H1206	
8. (i) कवितावली (उत्तर कांड से) (ii) लक्ष्मण मूच्छा और राम से विलाप	H1210 H1204, H1205	अलंकार परिचय भी सामिल करें ।
9. (i) रूबाईयाँ (ii) मैमरे में बंद अपाहिज	H1205, H1207 H1205, H1210	
10. (i) छोटा मेरा खेत (ii) बगुलों के पख	H1205, H1205 H1205	
11. (i) भक्तिन	H1205, H1209	पाठ्य पुस्तक आधारित साहित्यिक विधाओं को शामिल करें ।
12. (i) बाजार दर्शन	H1205, H1208, H1211	कार्यालयी-पत्र संबंधी जानकारी शामिल करें ।
13. (i) काले मेघा	H1210	
14. (i) पहलवान की ढोलक	H1210	

એકમ/પ્રકરણ	અધ્યયન નિષ્પત્તિ	પાઠ્યપુસ્તકના સ્વાધ્યાયમાં ઉમેરવાની બાબતો
15. (i) चार्ली चैप्लिन यानी हम सब	H1211	
16. (i) नमक	H1210, H1211	
17. (i) शिरीष के फूल	H1205, H1210	
18. (i) श्रम विभाजन और जाति प्रथा (ii) मेरी कल्पना का आदर्श-समाज	H1202, H1203, H1205 H1203, H1205	

कक्षा : 11-12 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

सीखने के प्रतिफल

प्रस्तावना :

उच्चतर माध्यमिक स्तर में प्रवेश लेने वाला विद्यार्थी पहली बार सामान्य शिक्षा से विशेष अनुशासन की शिक्षा की ओर उन्मुख होता है । दस वर्षो में विद्यार्थी भाषा के कौशलों से परिचित हो जाता है । भाषा और साहित्य के स्तर पर उसका दायरा अब घर, आस-पास, पडोस, स्कूल, प्रांत और देश से होता हुआ धीरे धीरे विश्व तक फैल-जाता है । वह इस उम्र में पहुँच चुका है कि देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं पर विचारविमर्श कर सके, एक जिम्मेदार नागरिक की तरह अपनी जिम्मेदारीयों को समझ सके तथा देश और खुद को सही दिशा दे सकने में भाषा की ताकत को पहचान सके । ऐसे द्रढ भाषिक और वैचारिक आधार के साथ सब विद्यार्थी आते है तो उसे विमर्श की भाषा के रुप में हिंदी की व्यापक समझ और प्रयोग में दक्ष बनाना पहला उद्देश्य होगा । किशोरावस्था से युवावस्था के इस नाजुक मोड पर किसी भी विषय का चुनाव करते समय बच्चे और उनके अभिभावक इस बात को लेकर सबसे अधिक चिंतित रहते हैं कि चयनित विषय उनके भावी कैरियर और जीविका के अवसरो में मदद करेगा कि नहीं । इस उम्र के विद्यार्थीयों में चिंतन और निर्णय करने की प्रवृत्ति प्रबल होती है । इसी आधार पर वे अपने मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक और भाषिक विकास के प्रति भी सचेत होते हैं और अपने भावी अध्ययन की दिशा तय करते हैं ।

इस स्तर पर विद्यार्थियों में भाषा के लिखित प्रयोग के साथसाथ उसके मौखिक प्रयोग की कुशलता और दक्षता का विकास भी जरूरी है । प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी अपने बिखरे हुए विचारों और भावो की सहज और मौलिक अभिव्यक्ति की क्षमता हासिल कर सकें । विभिन्न विषयक्षेत्रों जैसे इतिहास, भौतिक विज्ञान अथवा गणित को समझने के लिए हमें भाषा की आवश्यकता होती है । चाहे हम प्रकृति को देखे या समाज को हम काफी हद तक उन्हें अपनी भाषा की संरचना के माध्यम से ही देखते हैं ।

भाषा को सीखना सिखाना :

इस संदर्भे में हम यही कहेंगे कि अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के एक माध्यम के रुप में हम भाषा को पहचानते रहे हैं । इसीलिए हम सब यही परिभाषा पढ़ते हुए बड़े हुए कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है; यानी भाषा के जरिए ही हम कुछ कहते और लिखते हैं और किसी के द्वारा कहे और लिखे को सुनते और पढ़ते हैं । इसीलिए भाषा के चार कौशलों की बात इस तरह से प्रमुख होती चली गई कि हम भूल ही गए कि कहने-सुनने वाला सोचता भी है । इस संदर्भ में बेर्टोल्ट ब्रेष्ट की कुछ पंक्तियाँ ध्यान देने योग्य है जिसमें सोचने के कौशल की ओर संकेत है - 'जनरल, आदमी कितना उपयोगी है, वह उड़ सकता है और मार सकता है । लेकिन उसमें एक नुक्स है - वह सोच सकता हैं ।' बच्चे जो कुछ देखते या सुनते हैं, उसे अपनी दृष्टि/समझ से देखते-सुनते हैं, और अपनी ही दृष्टि और समझ के साथ बोलते और लिखते हैं । यह दृष्टि/समझ एक परिवेश और समाज के भीतर ही बनती है इसलिए परिवेश और समाज के बीच बन रही बच्चे की समझ को उपयुक्त अभिव्यक्ति में समर्थ बनाने की कोशिश होनी चाहिए । जब कि

हो यह रहा है कि जब बच्चे स्कूल आते हैं तो घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच द्वंद्व शुरू हो जाता है । इस द्वंद्व से माध्यमिक स्तर के बच्चे जो कि किशोर वय में पहुँच रहे होते हैं, उनको भी जुझना पड़ता है । उनके पास अनेक सवाल हैं, अपने अपने आस-पास के समाज और संसार से । जिनका जवाब वे ढूँढ रहे है । अगर हमारी भाषा की कक्षा उनके सवालों और जवाबों को उनकी अपनी भाषा दे सके तो यह इसकी सार्थकता होगी । इसलिए कक्षा में भाषा कालों को एक साथ जोड़कर पढ़ने-पढ़ाने की दृष्टि भी विकसित करनी होगी । यह भी ध्यान रखना होगा कि भाषा कौशलो को बेहतर बनाने के लिए बच्चे के परिवेश में उस भाषा की उपयुक्त सामग्री उपलब्ध हो । खासतौर से द्वितीय भाषा के रुप में हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने वालो के लिए यह जरुरी होगा । भाषा पढ़ने के माहौल और प्रक्रिया के अनुसार ही बच्चो में सीखने के प्रतिफल होगे ।

पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ-

- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास ।
- स्वतंत्र और मौखिक रुप से अपने विचारो की अभिव्यक्ति का विकास ।
- साहित्य की विभिन्न विधाओ के मध्य अंतर्संबंध एवं अंतर की पहचान ।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के विमर्श की भाषा के रुप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना ।
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (राष्ट्रीयता, धर्म, जेंडर, भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास ।
- जाति, धर्म, लिंग, राष्ट्रीयता, क्षेत्र आदि से संबंधित पूर्वग्रहो के चलते बनी रुढ़ियो की भाषिक अभिव्यक्तियो के प्रति सजगता एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास ।
- विदेशी भाषाओं समेत विभिन्न भारतीय भाषाओं की संस्कृति की विविधता से परिचय कराना।
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास ।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और ईलेकट्रोनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और उन्हें नए-नए तरीके से प्रयोग करने की क्षमता का परिचय कराना ।
- भाषा में अमूर्त अभिव्यकता को समझने की पूर्व अर्जित क्षमताओं का उत्तरोत्तर विकास ।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास ।
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक और सामाजिक नज़रिए का विकास।
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियो का सामना कर रहे बच्चो में भाषिक क्षमताओ के विकास की उनकी अपनी विशिष्ट गति और प्रतिभा की पहचान करना ।
- ईलेकट्रोनिकस माध्यमो से जुड़ते हुए भाषा प्रयोग की बारीकियों और सावधानियों से अवगत कराना ।
- साहित्य की व्यापक धारा के बीच रखकर रचनाओं का विश्लेषण और विवेचन करने की क्षमता हासिल करना ।

कक्षा-11 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

<table>
<tr><th>सीखने - सीखाने की प्रक्रिया</th><th></th><th>सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)</th></tr>
<tr><td rowspan="11">

सभी विद्यार्थीयों को समझते हुए सुनने, बोलने, पढ़ने, लिख्ने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ताकि-

- कक्षा का वातावरण संवादात्मक हो ताकि अध्यापक, विद्यार्थी और पुस्तक तीनों के बीच एक रिश्ता बन सके ।
- विद्यार्थियों को संवाद में शामिल करने के लिए यह भी जरूरी होगा कि उन्हें एक नामहीन समूह न मानकर अलग अलग व्यक्तियों के रूप में अहमियत दी जाए। शिक्षक को अकसर एक कुशल संयोजक की भूमिका में स्वयं को देखना होगा ।
- अप्रत्याशित विषयों पर चिंतन करने और सोचे हुए की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास शिक्षक के सचेत प्रयास से ही संभव है। इसके लिए शिक्षक को एक निश्चित अंतराल पर नए-नए विषय - प्रस्तावित कर लेख एवं अनुच्छेद लिखने तथा संभाषण करने के लिए पूरी कक्षा को प्रेरित करना होगा । यह अभ्यास ऐसा है, जिसमें विषयो की कोई सीमा तय नहीं की जा सकती ।
- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशो की सगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो वीडियो-कैसेट तैयार किए जाएँ । अगर आसानी से कोई गायक-गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए ।
- वृतचित्रो और फीचर फिल्मो को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है । इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिये सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग अलग छटा दिखाई जा सकती है ।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक

</td><td></td><td>विद्यार्थी-</td></tr>
<tr><td>H1101</td><td>रोजमर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति विशेष में भाषा का काल्पनिक और - सृजनात्मक प्रयोग करते हुए भावनाओं को लिखित एवं मौखिक रुप से प्रकट करते हैं । जैसे-पानी के बिना एक दिन, बिना आँखों के एक दिन ।</td></tr>
<tr><td>H1102</td><td>पाठ्य-पुस्तकों में शामिल रचनाओं के साथ ही पाठ्यकविता-सामग्री से इतर रचनाओं-कहानी, एकांकी और समाचार पत्र इत्यादि पढ़ते हैं और लिखकर बोलकर अपनी राय अभिव्यक्त करते हैं।</td></tr>
<tr><td>H1103</td><td>प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर लिखकर व्यक्त करते हैं । जैसे- बदलती प्रकृति, डिजिटल शिक्षक एक विकल्प ।</td></tr>
<tr><td>H1104</td><td>विविध साहित्यक विधाओं के अंतर को समझते हुए उनके स्वरूप का विश्लेषण करते हैं ।</td></tr>
<tr><td>H1105</td><td>अपने अनुभवों एवं कल्पनाओं को सृजनात्मक ढंग से लिखने हैं, जैसे कोई यात्रा-वर्णन, संस्मरण, डायरी आदि लिखना ।</td></tr>
<tr><td>H1106</td><td>कविता या कहानी को अपनी समझ के आधार पर नए रूप में प्रस्तुत करते हैं । जैसे - कहानी का नाटय रुपांतरण या कविता को कहानी का रूप देते है या किसी रचना को अपने ढंग से विस्तार देते हैं ।</td></tr>
<tr><td>H1107</td><td>कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली कामकाजी हिन्दी की समझ प्रकट करते हैं।</td></tr>
<tr><td>H1108</td><td>फिल्म एवं विज्ञापनों को देखकर उनकी भाषा और शैली के समान दृश्यमाध्यम की भाषा का प्रयोग अपनी रचनाओं में करतें हैं ।</td></tr>
<tr><td>H1109</td><td>परिवेशगत भाषाप्रयोगों को सीखते हैं और उन पर सवाल करते हैं जैसे -रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, बसस्टेन्ड, ट्रक ऑटो रिक्शा के पीछे लिखी गई भाषा की शैली पर ध्यान देते हैं ।</td></tr>
<tr><td>H1110</td><td>हिंदी के साथ साथ अन्य भाषाओं को भी सीखने का प्रयास करते हैं और उनकी प्रकृति और अंर्तसंबंधो के प्रति जागरुक रहते हैं ।</td></tr>
</table>

सीखने - सीयाने की प्रक्रिया		सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)
उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सके और शिक्षक उनका कक्षा में अलग अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सके । ● भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सके कि वे भी शब्दकोश, साहित्य, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं । इससे विद्यार्थियों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी । ● समय समय-पर जनसंचार माध्यमों फिल्म साहित्य आदि अलग अलग माध्यमों से जुडे व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी स्कूल में बुलाया जाए तथा उनकी देखरेख में कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ । ● कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधयों जैसे - अभिनय, भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले), कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हो तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हो । ● उन्हें इस बात के अवसर मिले कि वे रेडियो, टेलीविजन पर खेल, फिल्म, संगीत आदि से संबंधित कार्यक्रम देखें और उनकी भाषा, लय आदि पर चर्चा करें । ● संगीत, लोककलाओं, फिल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर करने / सुनने के बाद संबंधित गतिविधियाँ कक्षा में हो । विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे आसपास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें । ● कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छबियों / विधाओं के अन्तर्सबन्धो को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो जैसे - आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि ।	H1111 H1112 H1113	पाठ में आए हस्तकला, वास्तुकला, खेतीवाडी एवं अन्य व्यवसायों से संबंधित शब्दावली पर ध्यान देते हैं और उनकी उपयोगिता पर चर्चा करते हैं । सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से चुनौती प्राप्त समूहों के प्रति संवेदनशीलता एवं समानुभूति लिखकर एवं बोलकर अभिव्यक्त करते हैं । सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए भाषा एवं साहित्य के नवीन कौशल्यों को अर्जित करते हैं एवं उसकी भाषिक अभिव्यक्ति अलग अलग माध्यमों के द्वारा करते हैं ।

कक्षा-12 हिन्दी (प्रथ भाषा)

सीखने - सीखाने की प्रक्रिया		सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)
समी विद्यार्थीयों को समझते हुए सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ताकि- ● कक्षा का वातावरण संवादात्मक हो ताकि अध्यापक, विद्यार्थी और पुस्तक तीनों के बीच एक रिश्ता बन सके । ● विद्यार्थियों को संवाद में शामिल करने के लिए यह भी जरूरी होगा कि उन्हें एक नामहीन समरूह न मानकर अलग अलग व्यक्तियों के रुप में अहमियत दी जाए। शिक्षक को अकसर एक कुशल संयोजक की भूमिका में स्वयं को देखना होगा । ● अप्रत्याशित विषयों पर चिंतन करने और सोचे हुए की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास शिक्षक के सचेत प्रयास से ही संभव है । इसके लिए शिक्षक को एक निश्चित अंतराल पर नएनए विषय - प्रस्तावित कर लेख एवं अनुच्छेद लिखने तथा संभाषण करने के लिए पूरी कक्षा को प्रेरित करना होगा । यह अभ्यास ऐसा है, जिसमें विषयों की कोई समा तय नहीं की जा सकती । ● मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशो की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो वीडियो-कैसेट तैयार किए जाएँ । अगर आसानी से कोई गायक गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए । ● वृत्त चित्रो और फीचर फिल्मो को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है । इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिये सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग अलग छटा- दिखाई जा सकती है ।	 H1201 H1202 H1203 H1204 H1205 H1206 H1207 H1208	**विद्यार्थी-** हिंदी भाषा एवं साहित्य की परंपरा की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचारविमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं । रोजमर्रा के जीवन से अलग किसी घटना विशेष में भाव का काल्पनिक और स्थिति सृजनात्मक प्रयोग करते हुए भावनाओं को लिखित एवं मौखिक रूप से प्रक्ट करते हैं । जैसे- कोरोना काल के बाद स्कूल, संचार माध्यम के बिना एक दिन शहर से गाँव तक चलते हुए । पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के साथ ही पाठ्य कविता-सामग्री से इतर रचनाओं- कहानी, एकांकी और समाचार पत्र इत्यादि पढते है और लिखकर बोलकर अभिव्यक्त करते हैं । विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढते हुए उनके सौंदर्य पक्ष एवं काव्यशास्त्रीय संरचनाओ पर चर्चा करते हैं । जैसे कहानी और कविता में अंतर या कविता में छंद अलंकार इत्यादि । पाठ में सम्मिलित अलग-अलग भाषाओं की सामग्री के माध्यम से भाषा, समाज, संस्कृति का अध्ययन करते हैं । जैसे - भाषाई समानताओं और विभिन्नताओं पर चर्चा करते हैं । पाठ में आयी हस्तकला, वास्तुकला, खेतीवाडी, एवं अन्य व्यवसायों से संबंधित शब्दावली पर ध्यान देते हैं और उनका प्रयोग करते हैं । जैसे - जैविक खेती पर किसानों और कृषि विशेषज्ञों के साक्षात्कार बातचीत या हस्तकला पर किसी लोक कलाकार से बातचीत के लिए कुछ सवालों के बिदु तैयार करना । सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा के प्रति) की तार्किक ढंग से चर्चा करते हैं । कार्यालयो में प्रयुक्त होने वाली कामकाजी हिन्दी की समझ प्रकट करते है । जैसे- टिप्पणी लेखन, पत्र लेखन इत्यादि ।

સૂચિત શિક્ષણશાસ્ત્રીય પ્રક્રિયા		અધ્યયન નિષ્પત્તિ (Learning Outcomes)
● कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनका कक्षा में अलग अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सके । ● भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं । इससे विद्यार्थियों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी । ● समयसमय पर जनसंचार-माध्यमों फिल्म साहित्य आदि अलग अलग माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी स्कूल में बुलाया जाय तथा उनकी देखरेख में कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ । ● कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों जैसे - अभिनय, भूमिका निर्वाह (रोल-प्ले), कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हो तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हो । ● उन्हें इस बात के अवसर मिले कि वे रेडियो, टेलीविज़न पर खेल, फिल्म, संगती आदि से संबंधित कार्यक्रम देखें और उनकी भाषा, लय आदि पर चर्चा करें । ● संगीत, लोककलाओं, फिल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर करने / सुनने के बाद संबंधित गतिविधियाँ कक्षा में हो । विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि वे आसपास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें । ● कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध छवियों / विधाओं के अन्तर्सबंधो को समझते हुए उनके परिवर्नशील स्वरूप पर चर्चा हो जैसे - आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि ।	H1209 H1210 H1211	कविता या कहानी को अपनी समझ के आधार पर नए रूप में प्रस्तुत करते हैं । प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर लिखकर व्यक्त करते हैं । जैसे - महामारी से बदलती प्रकृति और समाज की परिस्थितियों पर अलग अलग क्षेत्रो के लोग प्राकृतिक आपदा और सामाजिक दायित्व जैसे विषयों पर अपनी राय लिखना । फिल्म एवं विज्ञापनों को देखकर उनकी भाषा और शैली के समान दृश्यमाध्यम की भाषा का प्रयोग करते हैं । जैसे- पटकथा लेखन या विज्ञापन लेखन ।

कक्षा-12 : हिन्दी (प्रथम भाषा)

समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए कुछ सुझाव

कक्षा में सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्चा समान रहती है एवं कक्षागतिविधियों में सभी बच्चों की प्रतिभागिता होनी चाहिए । विशिष्ट अश्यकता वाले बच्चो के लिए पाठ्यचर्चा में कई बार रूतान्तरणों की आवश्यकता होती है । दिए गए सीखने के प्रतिफल समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए है, परंतु कक्षा में ऐसे भी बच्चे होते हैं, जिनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ होती हैं, जैसे बधिर-दृष्टि श्राव्यबाधित इत्यादि । उन्हें अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है । उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षको के लिये निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं -

- अध्यापक द्वारा विभिन्न प्रारूपो पत्रलेखन जैसे आवेदन आदि को मौखिक रुपसे समझाया जा सकता है ।
- विद्यार्थियों को बोलकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ।
- अध्यापक बातचीत के माध्यम से कक्षा में संप्रेषण कौशल को बढ़ा सकते हैं ।
- नए शब्दो की जानकारी ब्रेल लिपि में अर्थ सहित दी जानी चाहिए ।
- दैनिक गतिविधियों का मौखिक अर्थपूर्ण भाषिक अभ्यास ।
- प्रश्नों का निर्माण करना और बच्चों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना । साथ ही बच्चो को भी प्रश्ननिर्माण करने को कहना और स्वयं उनका उत्तर तलाश करने के लिए कहना ।
- उच्चारण सुधारने लिए ऑडियो सामग्री का प्रयोग और कहानी सुनाना । अलग अलग तरह की आवाजो की रिकॉडिंग करके, जैसे झरना - हवा, लहरें, तूफान, जानवर और परिहवन, ताकि उनके माध्यम से संकल्पना विचार को समझाया जा सके / धाराणा ।
- विद्यार्थियों को एक दूसरे से बातचीत के लिए प्रेरित करना ।
- अभिनय, नाटक और भूमिका का प्रयोग करने के लिए प्रेरणा देना । (रोल-प्ले) निर्वाह -
- पढ़ाए जाने वाले विषय पर दृश्य शब्दकोश की शीट तैयार की जाए, जैसे शब्दो को चित्रों को बताया जाए/ माध्यम से दिखाया जाए ।
- बोर्ड पर नए शब्दों को लिखना । यदि उपलब्ध हो तो शब्दकोश के शब्दो को चित्र के माध्यम से प्रयोग किया जाए ।
- नए शब्दोको बच्चों के रोजमर्रा के जीवन में इस्तेमाल करना और विभिन्न प्रसंगो में उनका प्रयोग करना ।
- शीर्षक और विवरण के साथ दृश्यात्मक तरीके से कक्षा में शब्दों का प्रयोग करना ।
- स्पष्ट रूप से समझाने के लिए फुटनोट को उदाहरण के साथ लिखना ।
- संप्रेषण के विभिन्न तरीको जैसे - मौखिक एवं अमौखिक ग्राफिक्स, कार्टून्स बोलते हुए गुब्बारे (चित्रो, संकेतो, ठोस वस्तुएँ एवं उदाहरण का प्रयोग करना ।)
- लिखित सामग्री को छोटे छोटे एवं सरल वाक्यों में तोड़ना - संक्षिप्त करना तथा लेखन को व्यवस्थित करना।
- बच्चो को इस योग्य बनाना की वे रोजमर्रा की घटनाओं को साधारण ढंग से डायरी, वार्तालाप, जर्नल पत्रिका इत्यादि के रूप में सिख सके ।
- वाक्यो की बनावट पर आधारित अभ्यासो को बारबार देना - ताकि बच्चा शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोग को ठीक ढंग से सीख सके । (चित्र / समसामयिक / समाचार / घटना आदि से उदाहरणो का प्रयोग करें।
- बच्चों के स्तर के अनुसार उन्हें पाठ्यसामग्री तथा संसाधन प्रदान करना ।

- पाठ में आए मुख्य शब्दो पर आधारित तरह तरह के अनुभवो को देना ।
- कलर कोडिंग (Colour coding) प्रयोग करना - स्वर एवं व्यंजन के लिए अलग - जैसे अलग रंगो का प्रयोग, कांसेप्ट मैप (concept map) तैयार करना ।
- प्रस्तुतिकरण के लिए विभिन्न शैली एवं तरीकों, जैसे दृश्य- श्राव्य, प्रायोगिक, शिक्षण इत्यादि का प्रयोग ।
- अनुच्छेदो को सरल बनाने के लिए उनकी जटिलता को कम किया जाए ।
- सामग्री को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए भिन्न भिन्न विचारों, नए शब्दो के प्रयोग, कार्डस, हाथ की कठपुतली, वास्तविक जीवन के अनुभवो, कहानी प्रस्तुतीकरण, वास्तविक वस्तु एवं पूरक सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है ।
- अच्छी समझ के लिए जरूरी है कि विषय से संबंधित पृष्ठभूमि के बारे में पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए नई सूचना दी जाए ।
- कविताओ का पठन, समुचित भावाभिव्यक्ति गायन के साथ किया जाए ।
- पाठो के परिचय एवं परीक्षण खंड अथवा आकलन में विभिन्न समूहों के लिए विचिन्न प्रकार के प्रश्नों की रचना की जा सकती है ।
- नए शब्दो के लिए अर्थ या पर्यायवाची, उन शब्दो के साथ ही कोष्टक में लिखें जाएँ । जिन शब्दो की व्याख्या जरूरी हो, उन्हें व्याख्यायित किया जाए तथा सारांश को रेखांकित किया जाए ।

सीखने के प्रतिफलकुछ महत्त्वपूर्ण बिदु -

- सीखने के प्रतिफल, सीखने सिखाने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों तथा-बच्चों को सिखाने में मदद करने वाले सभी लोगों की सुविधा के लिए विकसित किया गया हैं ।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर (१११-२ सिखाने की प्रक्रिया और माहौल में विशेष अंतर पर सीखने) सिखाने के विकासात्मक स्तर में अंतर हो सकता है ।
- भाषा सीखने के प्रतिफलो का ठीक ढंग से उपयोग करने के लिए, दस्तावेज़ में प्रारंभिक पृष्ठभूमि दी गई है । इसे पढ़ें, यह विद्यार्थियों की प्रगति को सही ढंग से समझने में मदद करेगी ।
- इसमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रुपरेखा २००५ के आधार पर विकसित पाठ्यक्रम में ग्यारहवी और बारहवीं कक्षाओं के लिए हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए पाठयक्रम संबंधी अपेक्षाएँ दी गई हैं ।
- इन पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं को विद्यार्थी तभी हासिल कर सकता हैं, जब सीखने के तरीके और कक्षा में अनकूल माहौल हो ।
- यद्यपि हमारी कोशिश यही रही है कि कक्षावार प्रतिफलों को दिया जाए, लेकिन भाषा की कक्षा में सीखने के विभिन्न चरणों को देखते हुए इस प्रकार का बारीक अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है ।
- सीखने के प्रतिफल बच्चे के मनोवैज्ञानिक धरातलको ध्यान में रखते हुए, सीखने की प्रक्रिया के सभी अभिगमानुकूल तथ्यों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं ।
- ये प्रतिफल सीखने सिलखाने की प्रक्रिया के दौरान सतत और समग्र आकलन में भी आपकी मदद करेंगे, क्योंकि सीखनेभी (प्रतिपुष्टि) सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे को लगातार फ़ीडबैक मिलता जाएगा।
- इन प्रतिफलों की अच्छी समझ बनाने के लिए पाठ्यचर्चा और पाठ्यक्रम को पढ़ना समझना बेहद जरूरी है ।
- ये प्रतिफल विद्यार्थी की योग्यता, कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण तथा उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक विशेषताओं से जुड़े हुए है । आप देखेंगे कि विद्यार्थी की आयु, स्तर और परिवेश की भिन्नताओं के अनुसार प्रतिफलों के सिद्धांत में भी बदलाव आता है ।

- समावेशी कक्षा को ध्यान में रखते हुए पाठयक्रम की अपेक्षाओं, सीखने के तरीके और माहौल तथा प्रतिफलों के विकास में सभी तरह के बच्चों को ध्यान में रखा गया है ।
- अलग अलग शिक्षार्थी समूहों एवं भाषायी परिवेश के अनुसार उल्लिखित एक ही प्रतिफल का अलग स्तर संभव है - अलग, जैसे पढ़ने या राय व्यक्त करने की दक्षता के अनुसार लिखने संबंधित प्रतिफलों का विविध स्तर हो सकता है ।
- इस दस्तावेज में चिह्नित किए गए प्रतिफलो के अतिरिक्त प्रतिफलो की ओर भी अध्यापकों का ध्यान जाना चाहिए ।

संदर्भ सामग्री -

- भाषा शिक्षण, भाग-१, एन.टी.आर.ई.सी., नयी दिल्ली
- भाषा शिक्षण, भाग-२, एन.टी.आर.ई.सी., नयी दिल्ली
- भारतीय भाषाओं का शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (१.३), एन.टी.आर.ई.सी., नयी दिल्ली
- इनसर्विस प्रोफेशनल डेवलपमेन्ट पैकेज (माध्यमिक स्तर) टीचिंग ऑफ हिंदी, आर.ए.एस.एम. के तहत प्रकाशित (अप्रकाशित प्रशिक्षण पैकेज)
- समझ का माध्यमी (मीडियम ऑफ लर्नींग), एन.टी.आर.ई.सी., नयी दिल्ली